**Research Ambition**
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
**ISSN: 2456-0146, Vol. 10, Issue-III, Nov. 2025**

# हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श
# (Discourse on the Elderly in Hindi Short Stories)

**Dr. Abha Gupta,**[a*]

[a]*Assistant Professor (Hindi), Government Degree College, Jakhini, Varanasi, Affilliated to Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi (India).*

**KEYWORDS**

वृद्ध, विमर्श, परिवार, उपेक्षा, कहानी, जीवन, अनुभव, पिता, संतान।

**ABSTRACT**

कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जो समाज की प्रत्येक घर और प्रत्येक व्यक्ति तक अपनी पहुंच बनाने में सक्षम है। गद्य की अन्य विधाओं की तरह कहानी विधा की शुरुआत भी भारतेंदु युग से होती है। कहानियों का प्रचलन अनादि काल से चला आ रहा है। भारतेंदु से पूर्व तिलस्मी कहानियां लिखी जाती थीं जो वास्तविक जीवन से काफी दूर थी। कहानी जीवन के हर पक्ष को चित्रित करती हैं। सामाजिक संरचना के अनुसार मनुष्य का जीवन परिवार के इर्द–गिर्द केंद्रित रहता है। उसी परिवार में एक वृद्ध व्यक्ति भी होता है जो परिवार का मुखिया माना जाता है। प्राचीन समय में वृद्धों को पूरा सम्मान एवं आदर दिया जाता था। उनके द्वारा दिए गए निर्णय को पूरा परिवार मानता था। परंतु वर्तमान काल में इस विचारधारा में काफी परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण वृद्धों की स्थिति काफी दयनीय एवं शोचनीय हो गई है।

वर्तमान समय में हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श पर अत्यधिक चर्चा हो रही है। जिस प्रकार दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श विचारणीय है उसी प्रकार वृद्ध विमर्श भी विचार का प्रश्न बन गया है। वह वृद्ध जो अपने युवावस्था में अपने पूरे परिवार का पालन पोषण करने के लिए दिन–रात मेहनत करता था। वही वृद्धावस्था में अपने बेटा, बेटी व परिवार के अन्य सदस्यों से उपेक्षित एवं अपमानित हो रहा है। जो एक समय पूरे परिवार का बोझ अकेले उठाता था, वृद्ध होने पर उसका अकेले का बोझ कोई नहीं उठा पा रहा है। हिंदी साहित्य में कहानीकारों ने कुछ कहानियों में वृद्ध के सम्मानित जीवन को और कुछ में अपमानित जीवन को चित्रित किया है। कहानी में विभिन्न विमर्श के दोनों पक्षों का चित्रण है। यह सर्वविदित है कि महाभारत काल में देवव्रत अपने पिता की इच्छा की पूर्ति के लिए आजीवन अविवाहित रहने का दृढ़ संकल्प लिया था। वही रामायण में श्री रामचंद्र अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए 14 वर्ष का वनवास स्वीकार करते हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथो में इस तरह की सैकड़ो हजारों कहानियाँ प्रचलित है, जो वृद्धों के सम्मान में समर्पित है। वहीं दूसरी तरफ कौरवों के हृदय में वृद्धों के प्रति कोई सम्मान ना था। सिमोन द बाउवार का कथन है–"समाज में जब व्यक्ति का योगदान रहा तब वह समाज का अभिन्न अंग बना रहा और जैसे ही बूढ़ा हो गया वह समाज से कट गया और केवल एक वस्तु बन कर रह गया ऐसी वस्तु जिसका ना कोई मोल है ना किसी काम का है और ना ही कुछ पैदा कर सकने योग्य।"[1]

वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध जातक कथा, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि में वृद्ध किसी ने किसी रूप में दिखाई देते हैं। पंचतंत्र, हितोपदेश आदि ग्रन्थों में "वृद्ध– पशु

**>Corresponding author**
***E-mail:** abhagdc@gmail.com (Dr. Abha Gupta). https://orcid.org/0009-0000-7354-0639
**DOI:** https://doi.org/10.53724/ambition/v10n3.05
Received 15th Sep. 2025; Accepted 15th Oct. 2025
Available online 30th Nov. 2025
2456-0146 /© 2025 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

पक्षियों" का इस प्रकार चित्रण किया गया है कि वह अपने सूझबूझ एवं अपने अनुभव से समस्याओं को सुलझाते हैं। इन कथाओं में वृद्ध के ज्ञान एवं अनुभव का सही उपयोग देख सकते हैं। परंतु आधुनिक युग में कहानियों में वृद्ध का स्वरूप परिवर्तित हो गया है। सामाजिक दृष्टि से वृद्ध व्यक्ति की भूमिका सदैव परिवर्तनशील रही है। परंपरागत भारतीय समाज में वृद्धजन को ज्ञान अनुभव और नैतिक मूल्य का भंडार माना जाता था। परिवार में उनके निर्णय को सर्वोपरि स्थान दिया जाता था और वह परिवार की परंपरा और अनुशासन के प्रतीक होते थे। लेकिन आधुनिकता, नगरीकरण और औद्योगीकरण के प्रभाव से जब संयुक्त परिवार विघटित होकर एकल परिवारों में बदल गए तब वृद्धों की सामाजिक स्थिति भी बदल गई। अब वे परिवार के केंद्र में नहीं बल्कि परिधि में आ गए। आर्थिक आत्मनिर्भरता की कमी, स्वास्थ्य समस्याएं और सामाजिक अनुभव ने उनके जीवन गुणवत्ता को गहराई से प्रभावित किया। वृद्धावस्था की इस जटिल विमर्श को हिंदी साहित्य ने कहानियों के माध्यम से अत्यंत संवेदनशील ढंग से चित्रित किया है। प्रेमचंद, यशपाल, रेणू, अमरकांत, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी और निर्मल वर्मा जैसे कहानीकारों ने वृद्ध पात्रों के माध्यम से समाज की संवेदनहीनता पीढ़ीगत घटनाओं और मानवीय एकाकीपन को सूक्ष्मता से उकेरा है। हिंदी कहानियों में प्रेमचंद एक ऐसा नाम है जो हिंदी साहित्य जगत में अमर है। प्रेमचंद जी को भारतीय ग्रामीण जीवन के अप्रतिम कहानीकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ के फलक पर बहुत ईमानदारी से रेखांकित किया। प्रेमचंद की कहानी प्रत्येक वर्ग एवं प्रत्येक लिंग की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है। उनकी कहानियों में कहीं न कहीं, किसी ने किसी रूप में वृद्ध पात्र और उनकी समस्याएं दिखाई देती हैं। प्रेमचंद की विध्वंस, सुजान भगत, बेटों वाली विधवा, पंच परमेश्वर, बूढी काकी आदि कहानियां वृद्ध पात्रों के जीवन पर केंद्रित है।

'पंच परमेश्वर' कहानी में प्रेमचंद जी ने जुम्मन शेख की खाला जान के रूप में एक बेबस लाचार वृद्धा का चित्रण किया है। खाला जान को वारिस नहीं था। इस कारण जुम्मन मियां की दृष्टि उनकी संपत्ति पर थी। संपत्ति की लालसा में जुम्मन मियां ने अपनी खाला से बड़े–बड़े वादे किये। खाला जान उसकी बातों में आकर अपनी संपत्ति उसके नाम कर देती हैं। संपत्ति की रजिस्ट्री होने के पश्चात जुम्मन मियां और उसकी पत्नी का रुख खाला जान के प्रति खराब होने लगा। खाला जान उन्हें बोझ लगने लगती हैं– "बुढ़िया ना जाने कब तक जिएगी। दो–तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया, माना मोल ले लिया है। बघारी दाल के बिना रोटियां नहीं उतरती। जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके उतने से तो अब तक गांव मोल ले लेते।"[2] वृद्ध व्यक्ति यदि धन संपत्ति से सशक्त है तभी परिवार में उसका महत्व है, नहीं तो उसकी मृत्यु की कामना की जाती है।

भीष्म साहनी की कालजयी कहानी 'चीफ की दावत' अत्यंत मार्मिक है। एक बूढी मां किस प्रकार बच्चों की भावना को समझ कर अपने को अपमानित होने से बचाती है। वह समझ जाती है कि उसका पुत्र अपने बॉस के सामने उसे ले जाना अपने प्रतिष्ठा के खिलाफ समझता है। 'चीफ की दावत' में वृद्ध विमर्श का उत्कर्ष दिखाई पड़ता है। मां के प्रति शामनाथ का जो वस्तुवादी दृष्टिकोण है। वह आज के समाज की घृणित सच्चाई को उजागर करता है। वृद्ध मां पुत्र के लिए समस्या बन गई है कि बॉस के आने पर वह उसे कहां छुपा दें जिससे उसके बॉस के सामने उसकी इज्जत ना जाने पाए। मां के खर्राटे लेने से, उकडू बैठने, बेतरतीब कपड़े पहनने से चीफ के सामने अपमानित होना पड़ेगा, जिससे उसकी तरक्की में बाधा पहुँच सकती है। शामनाथ अपनी मां से कहता है– "और मां हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे

उतनी देर तुम यहां बरामदे में बैठना फिर जब हम यहां आ जाए तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।"[3]

ज्ञानरंजन की 'पिता' कहानी में नई पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के अंतर को बखूबी चित्रित किया गया है। पिता अपनी पुरानी जीवन शैली को परिवर्तित नहीं कर पाते है। वह बाहर सरकारी नल पर स्नान करता है, पंखे में ना सोकर घर के बाहर सोता है, आधुनिक खान–पान का विरोध करता है। जो उसके परिवार वालों को अच्छा नहीं लगता है। पिता के इस प्रकार की क्रियाकलाप से बच्चों को समाज में, आस–पड़ोस में बेज्जती महसूस होती है। 'पिता' कहानी में वृद्धों का संघर्ष व्यक्त हुआ है। पिता के प्रति असंतोष और सहानुभूति की मिली–जुली प्रतिक्रिया ही कहानी का मूल कथ्य है। "वह जब घूम फिर कर लौट रहा था तो पिता अपना बिस्तरा बाहर लगाकर बैठे थे, कनखी से उसने उन्हें अपनी गंजी से पीठ का पसीना रगड़ते हुए देखा और बचता हुआ वह घर के अंदर दाखिल हो गया। उसे लगा कि पिता को गर्मी की वजह से नींद नहीं आ रही है लेकिन उसे इस स्थिति से रोष हुआ। सब लोग पिता से अंदर पंखे के नीचे सोने के लिए कहा करते हैं पर वह जरा भी नहीं सुनते। हमें क्या, भोगें कष्ट!"

प्रेमचंद द्वारा लिखित "सुजान भगत" जो एक स्वाभिमानी बुजुर्ग की कहानी है। जिसने अपने परिवार के लिए दिन–रात कष्ट करके जमा पूंजी बनाई थी। भगत के परिवार में उनकी पत्नी और दो बेटे थे। जब सुजान भगत उम्र के अंतिम पड़ाव पर होता है तब उसे अपने ही बेटे के द्वारा मिलने वाली चुनौतियों और अपमानजनक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। एक बार जब सुजान अपने दरवाजे पर आए भिखारी को भीख लेने के लिए आगे बढ़ता है तब किस प्रकार अपने बेटे के द्वारा अपने को अपमानित महसूस करता है– "सेंत का माल नहीं है जो लुटाने चले हो। छाती फाड़–फाड़ कर काम करते हैं,तब दाना घर में आता है।"[4] ऐसा लगता है कि पिता ने बिना मेहनत किए ही बेटे को इस लायक बना दिया। इस स्थिति को प्रेमचंद ने मनोवैज्ञानिक धरातल एवं वास्तविकता के आधार पर उभारा है।

उषा प्रियंवदा की कहानी "वापसी" एक रिटायर्ड व्यक्ति की व्यथा की कहानी है, जो जिंदगी भर अपने परिवार के लिए रेलवे की नौकरी करता है और छोटे–छोटे स्टेशनों पर जहां कोई भी सुविधा नहीं थी वहां भी रात गुजारता है। किंतु रिटायर होने पर घर के सदस्यों के बीच उनकी ऐसी स्थिति हो जाती है कि उनके रहने के लिए घर में जगह तक नहीं है। उनकी पत्नी भी अपने बहू, बेटे, पोते–पोतियों में इस प्रकार रम गई थी कि गजाधर बाबू का उन्हें जरा भी ध्यान नहीं रहता था। गजाधर बाबू के लिए जगह क्या कहें किसी के दिल में भी जगह नहीं बची है– "गजाधर बाबू की पत्नी सीधे चौके में चली गई बची हुई मिठाइयों को कटोरदान में लेकर अपने कमरे में लाई और कनस्तर उनके पास रख दिया। फिर बाहर आकर कहां, अरे नरेंद्र! बाबूजी की चारपाई कमरे से बाहर निकाल दे, उसमें चलने तक की जगह नहीं है।"[5]

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है की वृद्ध विमर्श समाज में एक बहुत बड़ी समस्या बनकर उभर रहा है। भारतीय संस्कृति में बड़े बुजुर्गों के सम्मान की परंपरा सदियों से चली आ रही है। किंतु बदलते समय एवं जीवन मूल्यों के साथ यह स्थिति हो गई है कि बुजुर्गों को बोझ समझा जा रहा है। जिन बुजुर्गों ने अपने संतान के लिए अपने परिवार के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया,आज वही युवा पीढ़ी के आंखों की किरकिरी बन गया है। आधुनिक पीढ़ी उनके किसी भी आदतों से समझौता नहीं करना चाहता है। यही कारण है कि या तो बुजुर्ग स्वयं वृद्धाआश्रम चले जाते हैं या उनके परिवार द्वारा उन्हें छोड़ दिया जाता है। वृद्धों की इस स्थिति को हिंदी साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से कहानियों में उभारने का अथक प्रयास किया है।

**संदर्भः**

[1] डॉ. एस.वाय, होनगेकर–21वीं शती का हिंदी साहित्यः नव विमर्श, पृष्ठ– 306।

[2] प्रेमचंदः मानसरोवर, भाग–7, पृष्ठ– 110।

[3] भीष्म साहनीः प्रतिनिधि कहानियां, पृष्ठ –16।

[4] प्रेमचंदः मानसरोवर, भाग– 5 पृष्ठ–137।

[5] उषा प्रियंवदाः वापसी, प्रतिनिधि कहानियां, पृष्ठ–20।

**********